

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, आर०बी०जी०आर०

कॉलेज, महाराजगंज (सिवान)

लोह युगीन संस्कृतियाँ (Iron Age Cultures)
(शेष भाग II)

लोहे के प्रयोग की प्रधानता बढ़ने लगी; धातु उद्योग-धंधों तथा वास्तु कला पर भी इसका प्रभाव दिखने लगा। लेख रहित ढाले हुये सिक्के भी व्यापार में प्रयोग किये जाने लगे। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लोहयुगीन संस्कृति का मानव सभ्यता के विकास पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

मृदुभाण्ड संस्कृति (Ware Culture) — दूसरे पात्र परम्परा की खोज ने भारतीय पुरातत्व की एक अत्यंत गहन समस्या का समाधान किया है। सिन्धु सभ्यता के लगभग 1500 ई० पूर्व के पश्चात् तथा दसवीं शताब्दी ई० पूर्व के बीच के बीच के युग का नाम दिया जाता है लेकिन हस्तिनापुर, कौशांबी, मथुरा, भावस्ती तथा इन्द्रप्रस्थ आदि — अनेक प्राचीन स्थलों पर पात्र परम्परा की प्राप्ति ने भारतीय पुरातत्व में विचित्र दूसरे पात्र परम्परा को एक निश्चित एवं महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।

इस परम्परा का प्रसार पंजाब, हरियाणा, उत्तरी राजस्थान, तथा उपरी गंगाघाटी में विशेष रूप से मिलता है। जम्मू में मांडा से लेकर दक्षिण में मध्य प्रदेश के उज्जैन तक मिलता है। चित्रित दूसरे पात्रों की बनावट के आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि इस पात्र परम्परा के निर्माता तथा उपयोग करने वाले सम्भवतः पश्चिम से उत्तर पूर्व एवं दक्षिण की ओर अग्रसर हुये होंगे।

इन पात्रों में सुन्दर चिकनी तथा मुलायम मिट्टी का प्रयोग।

किया गया है। प्रमुख पात्र प्रकारों में कटोरे, थालियाँ तथा लोरे हैं। इन वर्तनों को आड़ी तथा पड़ी एवं तिरछी रेखाएं, सिगमा तथा स्वास्तिक आदि को चित्रित किया गया है। वर्तनों को विशेष प्रकार के आँवे में पकाया जाता था, जिसका तापमान क्रमशः कम होता जाता था, इसलिए ये वर्तन लाल रंग के न होकर दूसरे रंग के होते थे। वर्तनों को थोड़ा सूरवने पर, उनको अलंकृत करके फिर पकाया जाता है।

कृष्णलोहित पात्र परम्परा, कृष्ण लेपित पात्र परम्परा तथा लाल पात्र परम्परा भी चित्रित दूसरे पात्र परम्परा के साथ - दृष्टिगोचर होती थी। चित्रित दूसरे पात्र परम्परा का पुरातन में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इससे सम्बन्धित अनेक स्थलों की खुदाई से कुल मिलाकर इस संस्कृति के द्वारा एक विकसित ग्राम्य-जीवन की भाँकी के दर्शन होते हैं। इस संस्कृति को लौह-युगीन संस्कृति के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। चित्रित दूसरे पात्र परम्परा के निर्माताओं का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि पर आधारित था। वस्त्र तथा आभूषणों के विषय में जो जानकारी प्राप्त हुई है उनके अनुसार ये लोग सूती वस्त्रों का प्रयोग करते थे। स्त्री तथा पुरुष दोनों को वस्त्राभूषणों का शौक था। तरियाणा के कुरुक्षेत्र में पत्नी हुई ईंटों के मकान के अवशेष मिलते हैं। मृदभांड परम्परा के लोगों का आर्थिक जीवन अधिक कठिन नहीं था। वस्तु विनिमय का व्यवहार में प्रचलन था। धार्मिक

चित्रित घुसर मृदभांड (Painted Grey ware) -

ये पात्र सामान्यतः दो प्रकार के होते हैं- (1) ऊँचे गर्दन वाली तश्तरी के आकार का पात्र, (2) कटोरी के आकार का पात्र। ये पात्र आकार के पहले होते हैं जो कि मुलायम मिट्टी से चाक पुर बनाये जाते हैं। आग पर पकाने के कारण इनका रंग धूसर से बदलकर भूरा तथा काला भी हो जाता है। चित्रकारी करने के लिए पहले पात्र को चाक से उतारने पर बाइक्रोम लगाकर विभिन्न प्रकार के चित्रों से सजाकर पकाया जाता है तथा चित्रण के लिए काला और कभी-कभी चाकलेली रंगों का प्रयोग किया जाता है।